International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 147-148
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-01-2018
Accepted: 09-02-2018

डॉ0 नमिता अग्रवाल
एसो0 प्रो0 संस्कृत, अतर्रा पी0जी0कालेज, अतर्रा बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 नमिता अग्रवाल
एसो0 प्रो0 संस्कृत, अतर्रा पी0जी0कालेज, अतर्रा बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत

वीथी–नाट्यशास्त्रीय विवेचना

डॉ0 नमिता अग्रवाल

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2018.v4.i1b.1748

प्रस्तावना

नाट्य शब्द अवस्पन्दनार्थ नट् धातु से निष्पन्न हुआ है। लोगों का जैसा कुछ स्वभाव है, और सुख–दुख की अनुभूति जैसे उन्हें होती है, उसको अँं संचालन एवं अभिनय के द्वारा जिसमें प्रदर्शित किया जाता है, उसे नाट्य कहते हैं। दशरूपककार धन×जय के अनुसार ''अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्''[1] यही नाट्य का लक्षण है। अर्थात् आँगि, वाचिक, आहार्य और सात्विक अभिनय के द्वारा जब हम यथार्थ पात्रों की विभिन्न अवस्थाओं (बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था) का अनुकरण करते हैं, उसे ही नाट्य कहा गया है। अनुकरण की यह प्रवृत्ति न केवल मनुष्यों में ही अपितु पशुओं में भी पाई जाती है। इस अनुकरण प्रवृत्ति का एक मात्र उद्देश्य मनोरंजन करना ही होता है। दूसरों की चेष्टाओं की नकल करके हम अपने मन को बहलाने का प्रयास करते हैं। अतः यदि हम अनुकरण वृत्ति को ही नाट्य का मूल कारण मानें तो सम्भवतः अनुचित न होगा। नाट्य वास्तव में मानव तथा मानवेतर प्रकृति का अनुकरण कर उसके द्वारा सामाजिकों को रसोद्बोध कराते हैं। दशरूपककार धन×जय ने इसे ही रूपक और रूप दोनों ही नामों से वर्णित किया है– ''रूपं दृश्यतयोच्यते'' तथा ''रूपकं तत्समारोपात्''[2] अर्थात् नाट्य दृश्य होने के कारण रूप भी कहा जाता है तथा कृत्रिम पात्रों पर यथार्थ पात्रों का आरोप किये जाने के कारण इसे रूपक भी कहते हैं। ''दशधैव रसाश्रयम्''[3] रस पर आधारित होने के कारण नाट्य दस प्रकार के होते हैं। ये दस प्रकार निम्नलिखित हैं–

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः
व्यायोग समवकारौ वीच्यङ्. इहामृगा इतिः[4]

इस प्रकार वीथी रूपक का ही एक भेद है।

वीथी अति महत्त्वपूर्ण रूपक है। वीथी का अर्थ है– मार्ग। यह वीथीः, वीथी, वीथिका, वीथिक आदि रूपों में प्रयुक्त है। वामन शिवराम आप्टे ने इसके–सड़क, मार्ग, पंक्ति, कतार, घट, आपणिका, रथ्या, नाटक का एक प्रकार आदि विभिन्न अर्थ किये हैं। वीथी शब्द इस प्रकार व्युत्पन्न हुआ ''वीथिः''–थी (स्त्री०) विथ (इन्, डीप् वा, पृषो०)[5] धनिक ने वीथी का अर्थ मार्ग बतलाया है ''वीथीघद्वीथी मार्गः अङ्गानां पङ्क्तिर्वा भाणवत्कार्या'' ।[6] रामचन्द्र गुणचन्द्र ने वक्रोक्ति मार्ग से जाने से वीथी के समान होने के कारण ही इसे वीथी माना है।[7] किन्तु डॉ0 कीथ वीथी में कई रस माला की तरह गूँथे रहने के कारण इसका अर्थ ''माला'' लगाते हैं। इसमें उद्घात्यक से मार्दव तक तेरह अङ्गों की (संध्यङ्गों की) पंक्ति रहती है– अतएव इस रूपक को ''वीथी'' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

भरत मुनि का मत है कि इसमें उत्तम, मध्यम या अधम तीनों प्रकृति के पात्रों का सन्निवेश होता है, तथा इसका अभिनय एक या दो पात्रों के द्वारा किया जाता है। यह एक अङ्क प्रधान तथा सभी रस और लक्षणों से युक्त, 13 वीथ्यङ्गों से युक्त होती है। ये तेरह वीथ्यङ्ग– उद्घात्यक, अवगलित, अवस्यंदित, असत्प्रलाप, प्रपंच, नालिका तथा वाक्केलि, अधिबल, छल, व्यावहार मृदव, त्रिगत और गण्ड हैं।8 धनंजय का मत है कि वीथी कैशिको वृत्ति में निबद्ध की जानी चाहिए। इसमें शृङ्गार रस होता है किन्तु पूर्ण परिवाक न होने के कारण वह सूच्य ही होता है, इसके अतिरिक्त अन्य रसों का भी किञ्चित् स्पर्श किया जाता है। एक या दो पात्रों से समन्वित होता है, इसमें सन्धि उसके अङ्ग तथा अङ्क भाण की तरह होते है– अर्थात् मुख, निर्वहण सन्धियाँ तथा एक अंक प्रधान होता है।[9]

सागरनन्दी मानते हैं कि वीथी का अभिनय एक या दो पात्रों के द्वारा नहीं बल्कि तीन पात्रों के द्वारा होता। उदाहरण के रूप में उन्होंने ''वकुल वीथी'' का उल्लेख किया है तथा इसमें बीज, बिन्दु तथा कार्य नामक तीन अर्थप्रकृतियाँ भी रहती हैं।[10]

नाट्यदर्पणकार रामचन्द्र गुणचन्द्र धन×जय के द्वारा स्वीकृत वीथी में कैशिकी वृत्ति का अस्तित्व स्वीकार रहीं करते हैं। वे मानते हैं कि अनेक प्रकार की वक्रोक्तियों से युक्त होने के कारण हास्य और शृङ्गार रस की सूचना मात्र होने से वीथी को कैशिकी वृत्ति विहीन कहा जा सकता है।

> ''वक्रोक्तिसहस्रसङ् कुलत्वेन शृङ्गार–हास्ययोः सूचनामात्रत्वात् कैशिकीवृत्तिहीनत्वम्'' ।[11]

भरत ने ''सर्वलक्षणसम्पन्न रसाढ्या'' वीथी को माना है, किन्तु रामचन्द्र गुणचन्द्र ''सर्वस्वामि रसा'' वीथी को मानते हैं और उसे सब रूपकों का सार मानते हैं। भरत मुनि ने वीथी में तीनों प्रकृति के नायक का अस्तित्व माना है।[12] किन्तु शंकुक अधम प्रकृति के पात्र को नायक नहीं मानते हैं। अभिनव गुप्त उसके मत का खण्डन करते हुए कहते हैं कि केवल अधम प्रकृति का होना ही उसे नायक होने से नहीं रोक सकता।[13]

रामचन्द्र गुणचन्द्र ने भी शंकुक के मत को निरर्थक सिद्ध करते हुए कहाँ कि शंकुक की मान्यता स्वीकार कर लेने पर विट के नायक होने की संभावना नहीं रहती–

> ''शङ्कुकस्त्वधमप्रकृतेर्नायकत्वमनिच्छन् प्रहसन भाणादौ हास्यरसप्रधाने विटादेर्नायकत्वं प्रतिपादयन् कथमुपादेयः स्यादिति''[14]

रामचन्द्र गुणचन्द्र यह भी मानते हैं कि जब वीथी में एक पात्र की योजना हो तब वह आकाशभाषित समन्वित होता है और जब दो पात्रों का प्रयोग किया गया हो तो कथोपकथन, उक्ति–प्रत्युक्ति में एक विचित्रता होती है।[15]

शारदातनय को दशरूपककार धन×जय के अनुसार ही वीथी का रसस्पर्शी रूप मान्य हैं। किन्तु वे वीथीं में वीथ्यङ्गों के साथ–साथ दस लास्याङगों की भी उपस्थिति स्वीकार करते हैं। इसी प्रसंग में शारदातनय ने कोहल और भोजराज के मतों को भी प्रस्तुत किया है। कोहल के मत में लास्याङग केवल ऐच्छिक है, किन्तु भोजराज लास्याङ्गों की योजना अनिवार्य मानते हैं।

> ''भवेयु र्वा न वेत्यस्यां लास्याङ्गान्याह कोहलः।
> वीथ्याः श्रृङगाररूपत्वाद्विधेयानीति भोजराट्'' ।।[16]

श्री शिङगभूपाल शारदातनय के मत से ही सहमत है। वह भी वीथ्यङगों के अतिरिक्त 10 लास्याङगों की योजना वीथी में मानते हैं। उनके मत में वीथी की नायिका सामान्या हो या परकीया पर वह अनुरागिनी अवश्य होनी चाहिए। वस्तु में वीथी की प्रधानता के कारण कुलपालिका नायिका नहीं हो सकती।[17]

विश्वनाथ कविराज धन×जय के मत से ही सहमत है। उनके अनुसार वीथी वह रूपक प्रकार है, जिसमें एक ही अङ्क हुआ करता है और एक ही नायक ''आकाशभाशित'' के द्वारा, चित्र–विचित्र, उत्तर–प्रत्युत्तर–पूर्वक, अन्यान्य काल्पनिक पात्रों से, आलाप संलाप करते हुए चित्रित किया जाता है। शृङ्गार रस अधिक तथा अन्य रसाभिव्यक्ति कम होती है। मुख और निर्वहण सन्धियाँ होती हैं, किन्तु अर्थप्रकृतियाँ सभी होती है तथा वीथ्याङ्गों व कैशिकी वृत्ति से युक्त होता है।[18]

संदर्भ–

1. धन×जय–दशरूपकम्, पृ0सं0 6, व्याख्याकार डॉ0 श्रीनिवासशास्त्रिणः, साहित्य भण्डार, मेरठ।
2. धन×जय–दशरूपकम्, पृ0सं0 7, व्याख्याकार डॉ0 श्रीनिवासशास्त्रिणः, साहित्य भण्डार, मेरठ।
3. धन×जय–दशरूपकम्, पृ0सं0 8, व्याख्याकार डॉ0 श्रीनिवासशास्त्रिणः, साहित्य भण्डार, मेरठ।
4. धन×जय–दशरूपकम्, पृ0सं0 8, व्याख्याकार डॉ0 श्रीनिवासशास्त्रिणः, साहित्य भण्डार, मेरठ।
5. वामन शिवराम आप्टे– संस्कृत हिन्दी कोश, पृ0सं0 966।
6. धन×जय–दशरूपक–तृतीय प्रकाश–धनिककृत वृत्ति भाग–पृ0सं0 180–181।
7. वक्रोक्तिमार्गेण गमनाद वीथीव वीथी।'' रामचन्द्रगुणचन्द्र, नाट्यदर्पण, द्वितीयविवेक, पृ0सं0 116।
8. सर्वरसलक्षणादया युक्ता ह्यङगैस्त्रयोदशभिः। वीथी स्यादेकाङका यथैकहार्या द्विहार्या वा।। अधमोत्तमव्याभिर्युक्ता स्यात् प्रकृतिभिस्तिसृभिः। अङगानां वक्ष्येऽहं लक्षणमखिलं यथादेशम्।। –भरत–नाट्यशास्त्रम्– 20/113–114, पृ0सं0 38
9. धन×जय–दशरूपक, 3/68–69, पृ0सं0 179–180
10. सागरनन्दी–नाटक–लक्षण–रत्नकोश, पृ0सं0 288
11. रामचन्द्र गुणचन्द्र–नाट्दर्पण–द्वितीयोविवेकः, पृ0सं0 116–117
12. भरत–नाट्यशास्त्रम्– 20/113–114, पृ0सं0 38
13. भरत–नाट्यशास्त्रतम् (अभिनव भारती सहित) भाग–2, सं0 डॉ0 आर0एस0 नागर, पृ0सं0 339
14. रामचन्द्र गुणचन्द्र–नाट्यदर्पण–द्वितीयोविवेक, पृ0सं0 117
15. रामचन्द्र गुणचन्द्र, नाट्यदर्पण–द्वितीयोविवेक, पृ0सं0 117
16. शारदातनय–भावप्रकाश–अष्टमोऽधिकारः, पृ0सं0 251
17. ''सूच्यप्रधानशृङगारा मुखनिवंहणान्विता।
    एकयोज्या द्वियोज्या वा कैशिकीवृत्तिनिर्भरा।
    वीथ्यङ्गसहितैकाङका वीथीति कथिता बुधैः।
    अस्यां प्रायेण लास्याङ्गदशकं योजयेन्न वा।
    सामान्या परकीया वा नायिकात्रानुरागिणी।
    वीथ्यङगप्रायवस्तुत्वान्नोचिता कुलपालिका।
    लक्ष्यमस्यस्तु विज्ञेयं माधवीवीधिकादिकम्'' ।।
    –श्रीशिङ्गभूपाल–रसार्णवसुधाकार, पृ0सं0 173
18. विश्वनाथ कविराज–साहित्यदर्पण, व्या0–डॉ0 सत्यव्रतसिंह, 6/283–263, पृ0सं0 521–529।